NJESR/December2019/Volume-I/Issue-12 E-ISSN 2582-5836
DOI-10.53571/NJESR2019.1.12.76-86
Peer Reviewed and Referred Journal

Dr. Seema Jain

Assistant professor of Sociology,Shri Jain PG College, Bikaner

(Received:26November2019/Revised:10December2019/Accepted:16December2019/Published:26December2019)

अविवाहित कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक पृष्ठभूमि

3.1 सामाजिक पृष्ठभूमि

3.2 आर्थिक पृष्ठभूमि

प्रस्तुत अध्याय में अविवाहित कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक पृष्ठभूमि को जिन चरों के संदर्भ में में विश्लेषित किया गया है, वे प्रमुख है – शैक्षणिक पृष्ठभूमि, जाति, धर्म पारिवारिक संरचना, व्यावसायिक पृष्ठभूमि तथा आर्थिक स्थिति आदि।

सामाजिक व आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना इसलिए आवश्यक है कि चरों द्वारा उत्तरदाताओं के सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक व्यकित्व का निर्धारण होता है। ये चर व्यक्ति के स्त्री–पुरूषों के बारे में मनोभावों, विचारों, विश्वासों अनुभूतियों, दृष्टिकोणों आदि को निर्मित करने में अहम भूमिका निभाते हैं। विभिन्न चरों के आधार पर उत्तरदाताओं की सामाजिक व आर्थिक पृष्ठभूमि को हम यहां निम्न बिन्दुओं में वर्णित कर रहे हैं :–

3.1 सामाजिक पृष्ठभूमि :–

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। सामाजिक पर्यावरण में ही मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। व्यक्ति समाजीकरण के माध्यम से सामाजिक मूल्यों व प्रतिमानों को सीखता है। उसे प्रस्थिति के साथ–साथ भूमिका निर्वाह का ज्ञान भी होता है। स्त्री– पुरूष में लिंगीय भेदभाव या असमानता समाज की उपज है। सामाजिक पर्यावरण ही स्त्री व पुरूषों में अन्तर के दृष्टिकोण, मनोभाव व विश्वास विकसित करताहै। भारत में आजादी के बाद परम्परागत लैंगिक असमानता के व्यवहारों में बदलाव आ रहा है। महिलाएं पुरूषों के बराबर जीवन के हर क्षेत्र में भागीदारिता निभा रही है। शिक्षित युवतियां व महिलाएं आर्थिक

Created by Universal Document Converter

रूप से स्वावलम्बी हो रही है। व्यावसायिक क्षेत्रों में महिला कार्मिक पुरूष कार्मिकों के साथ कंधे से कंधा मिला कर कार्य कर रही है। लेकिन अविवाहित कामकाजी महिलाओं के प्रति समाज की मनोवृति में आज भी परम्परागत रूढ़िवादिता पाई जाती है। इन्ही अवधारणाओं को आधार मानते हुए उत्तरदाताओं की सामाजिक पृष्ठभूमि को विश्लेषित किया गया है, जो इस प्रकार है।

1– आयुः– समाजशास्त्रीय दृष्टि से आयु का व्यक्तित्व के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण स्थान है। उम्र में बढ़ना सामाजिक दृष्टि से परिपक्वता होना हो, ऐसा आवश्यक नहीं है। शारीरिक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता दोनों अलग–अलग अवस्थाएं है यह आवश्यक नहीं कि जो व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से परिपक्व हो, उसमें सामाजिक व मानसिक परिपक्वता बढ़ती उम्र के साथ आ ही जाये। कम उम्र वाला भी सामाजिक व बौद्विक दृष्टि से परिपक्व हो सकता है।

आयु – सरंचना की दृष्टि से सूचनादाताओं को पांच भागों में विभाजित किया गया है, जो निम्नलिखित सारणी द्वारा प्रस्तुत है :–

तालिका 3.11

आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र.सं.	आयु वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	20–30 वर्ष	196	65.33
2	30–40 वर्ष	47	15.67
3	40–50 वर्ष	25	8.33
4	50–60 वर्ष	20	6.67
5	60 वर्ष से अधिक	12	4.00
	योग	300	100.00

Created by Universal Document Converter

उपरोक्त सारणी उत्तरदाताओं की आयु –सरंचना को अभिव्यक्त करती है। उक्त सारणी में 65.33 प्रतिशत उत्तरदाता 20.30 वर्ष के आयु समूह में आते है। 15.67 प्रतिशत उत्तरदाता 30–40 वर्ष के आयु समूह में आते है। 8.33 प्रतिशत उत्तरदाता 40–50 वर्ष के आयु समूह में आते है। 6.67 प्रतिशत उत्तरदाता 50–60 वर्ष के आयु समूह व 4 प्रतिशत उतरदाता 60 वर्ष से अधिक आयु समूह में आते है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में सभी आयु समूह के उत्तरदाताओं का प्रतिनिधित्व है।

2– शैक्षणिक पृष्ठभूमि – व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति के निर्धारण में शिक्षा अहम भूमिका निभाती है। भारत में नारी शिक्षा का अभाव ही नारी के पिछडेपन का मुख्य कारण रहा है। कोई भी अशिक्षित नारी अपनी सामाजिक व आर्थिक प्रस्थिति को ऊंचा नहीं उठा सकती। वर्तमान में जैसे–जैसे नारी शिक्षित होती जा रही है, वैसे–वैसे समाज में उसका दर्जा भी उपर उठता जा रहा है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए उत्तरदाता की शैक्षणिक पृष्ठभूमि को ज्ञात किया गया है, जो अग्रांकित सारणी द्वारा प्रकट किया गया है।

तालिका 3.12

शिक्षा के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र.सं.	शैक्षणिक स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	माध्यमिक	10	3.33
2	उच्च माध्यमिक	16	5.33
3	स्नातक	66	22.00
4	स्नातकोत्तर	102	34.00
5	व्यावसायिक शिक्षा	106	35.34
	योग	300	100.00

Created by Universal Document Converter

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि हमारे उत्तरदाताओं में 3.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं को माध्यमिक स्तर पर तक की शिक्षा प्राप्त है। 5.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं को उच्च माध्यमिक 22 प्रतिशत उत्तरदाता कला, विज्ञान व वाणिज्य वर्ग मं स्नातक की शिक्षा प्राप्त है तथा 34 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातकोतर तक शिक्षित है एवम् 35.34 प्रतिशत उत्तरदाता व्यावसायिक शिक्षा में स्नातक व स्नातकोतर स्तर की शिक्षा प्राप्त है। इस तरह प्रस्तुत अध्ययन में 91.34 प्रतिशत उत्तरदाता उच्च शिक्षा प्राप्त है।

3– जातीय सरंचना :– भारत जातिप्रधान देश है यहां व्यक्ति की प्रस्थिति जाति के आधार पर निर्धारित होती रही है। जाति व्यक्ति के खान–पान, व्यवसाय, विवाह, पारस्परिक सम्बन्धों के दायरे आदि को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है भारत में महिलाओं के पिछडेपन व शोषण का मुख्य कारण जाति रही है। अतः भारतीय समाज के किसी भी पक्ष को समझने के लिए जातीय संरचना को समझना आवश्यक है। इरावती कर्वे का मत है कि यदि हमें भारतीय समाज को समझना है तो जाति का अध्ययन आवश्यक है।

इसी कथन को आधार मानते हुए उत्तरदाताओं की जातीय संरचना को चार भागों में विभाजित कर विश्लेषित किया गया ळें

तालिका 3.13

जातीय आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र.सं.	आयु वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	उच्च	142	47.33
2	मध्यम	62	20.67
3	निम्न	44	14.67
4	अन्य	52	17.33
	योग	300	100.00

Created by Universal Document Converter

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि हमारे अध्ययन में 47.33 प्रतिशत उत्तरदाता उच्च जातियों के हैं जिनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य व जैन आदि जातीयां सम्मिलित है। मध्यम जातीयों का प्रतिशत 20.67 है। जिनमें माली, कुम्हार, सुथार, लौहार, जाट, बिश्नोई आदि जातीयां सम्मिलित है तथा 14.67 प्रतिशत निम्न जातीयों के उत्तरदाता है। जिनमें अनुसूचित जातीयां शामिल है तथा 17.33 प्रतिशत अन्य जातीयों के उत्तरदाता शामिल है, जिनमें मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई धर्मो की इकाईयां शामिल है।

4– धार्मि पृष्ठभूमि – भारत जैसे धर्मप्रधान देश में व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक, प्रातःकाल उठने से सोने तक जीवन के क्रियाक्लापों को प्रभावित करने में धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका है। विशेषकर महिलाएं धार्मिक मूल्यों, विश्वासों व मान्यताओं से अधिक प्रभावित रहती है। लिंगीय भेदभाव को वैधता प्रदान में धर्म की अहम भूमिका है, अतः धार्मिक दृष्टि से उत्तरदाताओं की स्थिति को जानना आवश्यक है प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं की धार्मिक पृष्ठभूमि अग्र सारणी द्वारा स्पष्ट है।

तालिका 3:1.4

धर्म के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र.सं.	धर्म	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हिन्दु	204	68.00
2	मुस्लिम	29	9.67
3	सिक्ख	13	4.33
4	ईसाई	10	3.33
5	जैन	44	14.67
	योग	300	100.00

Created by Universal Document Converter

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 68 प्रतिशत उत्तरदाता हिन्दू धर्म के हैं 9.67 प्रतिशत मुस्लिम, 4.33 प्रतिशत सिक्ख धर्म के उत्तरदाता है एवम् 3.33 प्रतिशत ईसाई, 14.67 प्रतिशत जैन धर्म के उत्तरदाता है।

5– पारिवारिक संरचना :– भारत में संयुक्त परिवार की प्रधानता रही है किन्तु वर्तमान में आधुनिक शक्तियां जैसे औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, स्त्री–शिक्षा में वृद्धि के कारण पारम्परिक पारिवारिक संरचना में परिवर्तन हो रहे है। एकाकी परिवारों की वृद्धि हो रही है इसी सन्दर्भ में प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं की पारिवारिक संरचना या स्वरूप को जानने का प्रयास किया गया है, जो निम्न सारणी द्वारा प्रस्तुत है

तालिका 3: 1.5

पारिवारिक संरचना के आधार पर उत्तदाताओं का वर्गीकरण

क्र.सं.	परिवार का स्वरूप	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	संयुक्त	111	37.00
2	एकाकी	189	63.00
	योग	300	100.00

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 37 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार में निवास करते है और 63 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार में निवास करते है। इस तरह उत्तरदाताओं में एकाकी परिवार का महत्व अधिक है। प्रस्तुत अध्ययन के सभी उत्तरदाता अविवाहित कामकाजी महिलाएं है। इससे स्पष्ट है कि आज जैसे–जैसे शिक्षा और व्यावसायिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारिता बढ़ती जा रही है, भारत में एकाकी परिवारों का महत्व बढता जा रहा है।

6– वैवाहिक पृष्ठभूमि :– विवाह वह संस्था है जो व्यक्ति को पारिवारिक जीवन में प्रवेश करती है। हिन्दु धर्म में विवाह एक धार्मिक संस्कार है। यद्यपि हिन्दू विवाह अधिनियम 1955 के बाद विवाह अब एक समझौता रह गया है, लेकिन फिर भी भारतीय समाज में विवाह स्त्री – पुरूष की सामाजिक

Created by Universal Document Converter

प्रस्थिति के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आज भी भारत में अविवाहित व्यक्ति को माज में हीन भावना से देखा जाता है। विशेषकर अविवाहित महिलाओं के बारे में समाज में कई भ्रांतियां पाई जाती है।

प्रस्तुत अध्ययन की सभी उत्तरदाता अविवाहित कामकाजी महिलाएं है, लेकिन जब उसने पूछा गया कि क्या वे विवाह करना चाहेंगी, तो 89 प्रतिशत विवाह करने की इच्छुक है। 11 प्रतिशत उत्तरदाता विवाह की इच्छुक नहीं है। जिनमें अधिकतर उत्तरदाता सेवानिवृत या अधिक आयु वाली उत्तरदाता है।

3.2 आर्थिक पृष्ठभूमि –

आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता व स्वावलम्बन व्यक्ति के सामाजिक व्यक्तित्व व प्रस्थिति– निर्माण में महत्वपूर्ण कारक है। भारत में महिलाओं की निम्न व शोषित प्रस्थिति का सबसे बड़ा कारण आर्थिक रूप से पुरूषों पर महिलाओं की निर्भरता है। लेकिन आजादी के बाद जैसे – जैसे महिलाओं में आर्थिक स्वावलम्बन व स्वरोजगार की प्रवृति बढ़ती जा रही है, वैसे–वैसे महिलाओं की परम्रागत प्रस्थिति में आमूलचूल परिवर्तन हो रहा है।

प्रस्तुत अध्ययन कामकाजी महिलाओं के समक्ष व्यावसायिक व सामाजिक चुनौतियों के विषय पर आधारित है। ऐसे में उत्तरदाताओं की आर्थिक पृष्ठभूमि का तथ्यगत विश्लेषण आवश्यक है। इसी सन्दर्भ में उत्तरदाताओं की आर्थिक पृष्ठभूमि को निम्न बिन्दुओं में ज्ञात किया गया है जो इस प्रकार है।

1– व्यावसायिक पृष्ठभूमि – उत्तर दाताओं की व्यावसायिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत उनके व्यावसायिक कार्यक्षेत्र को शामिल किया गया है। अध्ययन के उत्तरदाता अलग–अलग व्यावसायिक संस्थाओं में कार्यरत है, जो निम्न अग्र द्वारा स्पष्ट है :–

Created by Universal Document Converter

तालिका 3:2.1

व्यावसायिक पृष्ठभूमि के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र.सं.	व्यावसाय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	चिकित्सकीय (डॉक्टर)	12	4.00
2	विद्यालय शिक्षक	65	21.67
3	विधि सलाहकार	9	3.00
4	नर्सिग	73	24.33
5	पुलिस विभाग	10	3.33
6	निजी कम्पनियों में	49	16.33
7	वि.वि./महा.वि.व्याख्याता	28	9.33
8	बैंकर	38	12.68
9	अन्य	16	5.33
	योग	300	100.00

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता हैकि 4 प्रतिशत उत्तरदाता चिकित्सा क्षेत्र में डॉक्टर है 21.67 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यालय शिक्षक है, 3 प्रतिशत उत्तरदाता विधि सलाहकार (वकील) है, 24.33 प्रतिशत उत्तरदाता नर्सिग कर्मचारी है 3.33 प्रतिशत उत्तरदाता पुलिस विभाग में कार्यरत है। 16.33 प्रतिशत उत्तरदाता निजी कम्पनियों में कार्यरत है, 9.33 प्रतिशत उत्तरदाता विवि. / महाविद्यालय में व्याख्याता के पद पर कार्यरत है, 12.68 प्रतिशत उत्तरदाता बैंक कर्मचारी है एवं 5.33 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है।

2– कार्यक्षेत्र की पृष्ठभूमि :–

प्रस्तुत अध्ययन के उत्तरादाताओं के कार्यक्षेत्र की पृष्ठभूमि को कार्यस्थल और व्यावसायिक संस्था पर स्वामित्व के आधार पर सरकारी, अर्द्धसरकारी व निजी कार्यक्षेत्र के स्वरूप के आधार पर विश्लेषित किया गया है, जो अग्र सारणी द्वारा दर्शाया जा रहा है

Created by Universal Document Converter

तालिका 3 : 2.2

कार्य क्षेत्र के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र.सं.	कार्यक्षेत्र का स्वरूप	संख्या	प्रतिशत
1	सरकारी	113	37.67
2	अर्द्ध सरकारी	61	20.33
3	निजी	126	42.00
	योग	300	100.00

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि कार्यक्षेत्र के आधार पर उत्तरदाताओं को तीन भागों में बांटा गया है, जिनमें 37.67 प्रतिशत उत्तरदाता सरकारी क्षेत्र में कार्यरत है तथा 20.33 प्रतिशत उत्तरदाता अर्द्धसरकारी क्षेत्र में 42.00 प्रतिशत उत्तरदाता निजी क्षेत्र में कार्यरत है।

3– कार्य अवधि के आधार पर – व्यावसायिक क्षेत्र व कार्य–अवधि दोनों व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में अहम भूमिका निभाते है जो व्यक्ति जिस व्यावसायिक क्षेत्र में जितनी लम्बी अवधि तक कार्य करता है, उसका व्यक्तित्व भी उसी व्यावसायिक प्रकृति के अनुरूप बन जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में अविवाहित कामकाजी महिलाएं भिन्न–भिन्न कार्यक्षेत्र में कार्यरत है। उनकी कार्य–अवधि के आधार पर उन्हें निम्न वर्गो में विभाजित किया गया है, जो निम्न सारणी द्वारा प्रस्तुत है –

Created by Universal Document Converter

तालिका 3:2.3

कार्य अवधि के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र.सं.	आयु वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	0–10 वर्ष	200	66.67
2	10–20 वर्ष	48	16.00
3	20–30 वर्ष	41	13.67
4	30–40 वर्ष	11	3.66
	योग	300	100.00

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 66.67 प्रतिशत उत्तरदाता 0–10 वर्षो से कार्यरत है, 16 प्रतिशत उत्तरदाता 10–20 वर्षो से कार्यरत है। 13.67 प्रतिशत उत्तरदाता 20–30 वर्षो से कार्यरत है एवं 3.66 प्रतिशत उत्तरदाता 30–40 वर्षो से कार्यरत है।

4– मासिक आयः– प्रत्येक व्यक्ति आय–अर्जन के लिए कार्य करता है। व्यक्ति को आय या वेतन उसकी योग्यता, पद व वरिष्ठता के आधार पर देय होता है। अध्ययन के उत्तरदाता विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्र में भिन्न–भिन्न पदों पर कार्यरत है। उन्हें मासिक आय के आधार पर निम्न वर्गो में विभाजित किया गया है जो इस प्रकार है–

Created by Universal Document Converter

तालिका 3: 2.4

मासिक आय के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र.सं.	मासिक आय (रूपयों में)	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	0–5000	76	25.33
2	5000–10000	68	22.67
3	10000–15000	66	22.00
4	15000–20000	54	18.00
5	20000–25000	36	12.00
	योग	300	100.00

उपरोक्त सारणी सूचनादाताओं की मासिक आय को व्यक्त करती है। इसके अनुसार 25.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आय 5000 रूपये प्रतिमाह है। 22.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आय 5000–10000 रू, 22 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आय, 10000–15000 रूपये प्रतिमाह, 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं की 15000–20000 रूपये एवम् 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आय 20000–25000 रूपये मासिक आय है।

5– आर्थिक आत्मनिर्भरता – महिलाएं सदियों से पुरूषों पर आर्थिक रूप से निर्भर रही है। यद्यपि श्रम की दृष्टि से महिलाएं पुरूषों से अधिक उपार्जन सम्बन्धी कार्य करती है, लेकिन प्रत्यक्ष रूप से महिलाओं के घरेलू श्रम को आर्थोपार्जन या आय– अर्जन श्रम में शामिल नहीं किया जाता। लेकिन आजादी के बाद भारत में महिलाएं प्रत्यक्ष रूप से आय– अर्जन संबंधी कार्यो में भागीदार हो रही है। आज देश के विभिन्न व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में, चाहे वे सरकारी हों यो निजी, सभी में उच्च पदों से लेकर निम्न पदों तक वे कार्य कर रही है और पुरूषों के बराबर धन–अर्जन कर रही है। इस दृष्टि से महिलाएं निरन्तर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही है। इसी तथ्य को आधार मानते हुए जब उत्तरदाताओं से पूछा गया कि क्या आप अपने–आप को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर मानती है, तो 67 प्रतिशत अपने–आप को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर मानती है जबकि 26 प्रतिशत उत्तरदाता स्वंय को आर्थिक आत्मनिर्भर नहीं मानती, तथा 7 प्रतिशत उत्तरदाता इस प्रश्न पर मौन रही है।

Created by Universal Document Converter